

## स्टेट ऑफ इंडियाज़ बर्ड्स, 2023

### प्रलिमिस के लिये:

स्टेट ऑफ इंडियाज़ बर्ड्स, 2023, IUCN ([अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ](#)), [पश्चमी घाट](#), एशियाई कोयल, [प्रवासी पक्षी](#), [जलवायु परिवर्तन](#)

### मेन्स के लिये:

भारत के पक्षयों की स्थितिरपिर, 2023

### स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

### चर्चा में क्यों?

हाल ही में स्टेट ऑफ इंडियाज़ बर्ड्स (State of India's Birds- SoIB), अर्थात् भारत पक्षी स्थितिरपिर 2023 जारी की गई है, इसमें कुछ पक्षी प्रजातयों के अच्छे तरह विकास होने और कई पक्षी प्रजातयों में प्रयाप्त गरिवट को दर्शाया गया है।

- SoIB 2023 बॉम्बे नेचुरल हस्ट्री सोसाइटी (BNHS), वाइल्डलाइफ इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (WII) और [ज़ुलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया \(ZSI\)](#) सहित 13 सरकारी तथा गैर-सरकारी संगठनों का अपनी तरह का पहला सहयोगात्मक प्रयास है। उक्त संगठनों व निकायों के साथ वाइल्डलाइफ ट्रस्ट ऑफ इंडिया (WTI), वर्ल्डवाइड फंड फॉर नेचर-इंडिया (WWF-इंडिया) आदि भारत में नियमित रूप से पाए जाने वाली पक्षी प्रजातयों की समग्र संरक्षण स्थितिका मूल्यांकन करते हैं।

### रपिर में प्रयुक्त पद्धतयाँ:

- यह रपिर लगभग 30,000 पक्षी विज्ञानयों द्वारा एकत्र किये गए आँकड़ों पर आधारित है।
- इस रपिर में पक्षयों की आबादी का आकलन करने के लिये तीन प्राथमिक सूचकांकों को आधार बनाया गया है:
  - दीर्घकालिक रुझान (30 वर्षों में परिवर्तन)
  - वर्तमान वार्षिक प्रवृत्ति (पछिले सात वर्षों में परिवर्तन)
  - भारतीय वातिरण क्षेत्र का आकार
    - 942 पक्षी प्रजातयों के मूल्यांकन से पता चला है कि उनमें से कई प्रजातयों में स्टीक दीर्घकालिक या अल्पकालिक रुझान निर्धारित नहीं किये जा सके हैं।

### रपिर के प्रमुख बिंदु:

- स्थिति:
  - चहिनति दीर्घकालिक रुझानों वाली 338 प्रजातयों में से 60% प्रजातयों में गरिवट देखी गई है, 29% प्रजातयों स्थिर हैं तथा 11% में वृद्धि देखी गई है।
  - निर्धारित वर्तमान वार्षिक रुझान वाली 359 प्रजातयों में से 39% घट रही हैं, 18% तेज़ी से घट रही हैं, 53% स्थिर हैं और 8% बढ़ रही हैं।
- सकारात्मक रुझान: पक्षयों की प्रजातयों में वृद्धि:

- सामान्य गरिवट के बावजूद कुछ पक्षी प्रजातियों में कुछ सकारात्मक उज्ज्ञान देखे गए हैं।
- उदाहरण के लिये भारतीय मोर जो भारत का राष्ट्रीय पक्षी है, बहुतायत और वसितार दोनों मामले में उल्लेखनीय वृद्धिदिखी जा रही है।
  - इस प्रजाति ने अपनी सीमा को नए प्राकृतिक वास में वसितारति किया है, जिनमें उच्च तुंग वाले हमिलयी क्षेत्र और [पश्चिमी घाट](#) के वर्षावन शामिल हैं।
- एशियन कोयल, हाउस क्रो, रॉक पजिन और एलेक्जेंड्रनि पैराकीट (Alexandrine Parakeet) को भी उन प्रजातियों के रूप में उजागर किया गया है जिन्होंने वर्ष 2000 के बाद से उल्लेखनीय वृद्धिकी है।
- वशिष्ट पक्षी प्रजातियाँ:
  - पक्षी प्रजातियों जो "वशिष्ट" हैं- आरदरभूमि, वर्षावनों और घास के मैदानों जैसे संकीर्ण आवासों तक ही सीमति हैं, जबकि इन प्रजातियों के विपरीत वृक्षोपण और कृषिक्षेत्रों जैसे वयापक आवासों में निवास करने वाली प्रजातियाँ तेज़ी से घट रही हैं।
  - "सामान्य पक्षी प्रजाति" जो कई प्रकार के आवासों में रहने में सक्षम हैं, एक समूह के रूप में अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं।
    - "हालाँकि, वशिष्ट प्रजाति के पक्षियों को सामान्य प्रजाति के पक्षियों की तुलना में अधिक खतरा है।
    - घास के मैदानों में वास करने वाले वशिष्ट पक्षियों में 50% से अधिक की गरिवट आई है।
  - वनों में वास करने वाले पक्षियों में भी सामान्य पक्षियों की तुलना में अधिक गरिवट आई है, जो प्राकृतिक वन आवासों को संरक्षित करने की आवश्यकता को दर्शाता है ताकि वे वशिष्ट प्रजाति के पक्षियों को को आवास प्रदान कर सकें।
- प्रवासी और निवासी पक्षियों:
  - [प्रवासी पक्षियों](#), वशिष्ट रूप से यूरेशिया और आरकटकि से लंबी दूरी के प्रवासी पक्षियों में 50% से अधिक की सारथक कमी देखी गई है, साथ ही कम दूरी के प्रवासी पक्षियों की संख्या में भी कमी आई है।
  - आरकटकि में प्रजनन करने वाले टटीय पक्षी वशिष्ट रूप से प्रभावित हुए हैं, जिनमें लगभग 80% की कमी आई है।
  - इसके विपरीत एक समूह के रूप में निवासी प्रजाति पक्षी अधिक स्थिर बने हुए हैं।
- पक्षियों के आहार और संख्या में गरिवट का पैटर्न:
  - पक्षियों की आहार संबंधी आवश्यकताओं में भी प्रचुरता देखी गई है। कशेरुक और मांसाहार खाने वाले पक्षियों की संख्या में सबसे अधिक गरिवट आई है।
    - डाइक्लोफेनाक (Diclofenac) से दूषित शवों को खाने से गदिध लगभग वलिपुत होने की अवस्था में थे।
    - सफेद पूँछ वाले गदिधों, भारतीय गदिधों और लाल सरि वाले गदिधों को सबसे अधिक दीर्घकालिक गरिवट (क्रमशः 98%, 95% और 91%) का सामना करना पड़ा है।
- स्थानकि पक्षियों और जलपक्षियों की आबादी में गरिवट:
  - [पश्चिमी घाट](#) और श्रीलंका जैवविविधि हॉटस्पॉट के लिये अद्वतीय स्थानकि प्रजातियों में तेज़ी से गरिवट आई है।
    - भारत की 232 स्थानकि प्रजातियों में से कई प्रजातियों का आवास स्थानवर्षावन हैं और उनकी गरिवट आवास संरक्षण के बारे में चित्ति पैदा करती है।
  - बततख, निवासी और प्रवासी दोनों की संख्या कम हो रही है, बेयर पोचार्ड, कॉमन पोचार्ड और अंडमान टील जैसी कुछ प्रजातियाँ वशिष्ट रूप से असुरक्षित हैं।
  - नदियों पर कई प्रकार के दबावों के कारण नदी के कनिारे रेतीले धोंसले बनाने वाले पक्षियों की संख्या में भी गरिवट आकर रही है।
- प्रमुख खतरे:
  - रपिरेट में वन कषरण, शहरीकरण और ऊर्जा अवसंरचना सहित कई प्रमुख खतरों पर प्रकाश डाला गया है, जिनका सामना देश भर में पक्षी प्रजातियों को करना पड़ रहा है।
  - नमिसुलाइड जैसी पशु चकितिसा दवाओं सहित प्रयावरण प्रदूषक अभी भी भारत में गदिध आबादी के लिये खतरा है।
  - [जलवायु परिवर्तन](#) के प्रभाव (जैसे प्रवासी प्रजातियों पर) पक्षी रोग और अवैध शक्तिकार तथा व्यापार भी प्रमुख खतरों में से हैं।
- अन्य प्रजातियों:
  - लंबी अवधि में सारस क्रेन की आबादी में तेज़ी से गरिवट आई है और यह जारी है।
  - कफोडवा की 11 प्रजातियों, जिनके लिये स्पष्ट दीर्घकालिक उज्ज्ञान प्राप्त किया जा सकते हैं, में से सात स्थिर दिखाई देती हैं, जबकि दो की आबादी घट रही है, और दो के मामले में तेज़ी से गरिवट आ रही है।
    - पीले मुकुट वाले कठफोडवा (Yellow-Crowned Woodpecker), जो व्यापक रूप से काँटेदार और झाड़ियों वाले जंगलों में रहते हैं, की संख्या में पछिले तीन दशकों में 70% से अधिक की गरिवट आई है।
  - जबकि विश्व भर में सभी बस्टर्ड में से आधे खतरे में हैं, भारत में प्रजनन करने वाली तीन प्रजातियाँ ग्रेट इंडियन बस्टर्ड, लेसर फ्लोरकिन और बंगाल फ्लोरकिन सबसे अधिक असुरक्षित पाई गई हैं।

## सफिरशिं:

- पक्षियों के वशिष्ट समूहों को संरक्षित करने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिये रपिरेट में पाया गया किंधास के मैदान संबंधी वशिष्ट प्रजातियों की संख्या में 50% से अधिक की गरिवट आई है, जो घास के मैदान के पारस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा और रखरखाव के महत्व को दर्शाता है।
- पक्षियों की आबादी में छोटे पैमाने पर होने वाले बदलावों को समझने के लिये लंबे समय तक पक्षियों की आबादी की व्यवस्थिति निगरानी करना महत्वपूर्ण है।
- गरिवट या वृद्धिके पीछे के कारणों को समझने के लिये और अधिक शोध की आवश्यकता सपष्ट होती जा रही है।
- रपिरेट के नष्टिकरण पक्षियों की आबादी में गरिवट को रोकने और एक स्वस्थ पारस्थितिकी तंत्र सुनिश्चित करने के लिये आवास संरक्षण, प्रदूषण को संबोधित करने तथा पक्षियों की आहार आवश्यकताओं को समझने के महत्व पर ज़ोर देते हैं।

## Warning signs for bird species

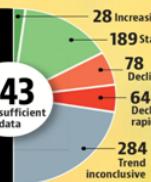
A total of 142 bird species in India were found to be declining, while only 28 were increasing, in recent years (annual change over past eight years), according to the State of Indian Birds report 2023, released on Friday. A look at its findings. By Jayashree Nandi

### CURRENT ANNUAL TREND

**942** birds assessed (299 had insufficient data)

**142** species declining (of which 64 seeing a rapid decline)

**217** species stable (189) or increasing (28) in the last eight years



### HOW SPECIES ARE FARING

Certain groups of birds are faring particularly poorly, including open habitat species such as bustards and coursers; riverine sandbar-nesting birds; coastal shorebirds; open-country raptors; and a number of ducks, the report said.

- 14 species, including Indian Roller, recommended for IUCN Red List reassessment
- Asian Koel has increased in the past three decades
- Birds that live in key habitats like open ecosystems, rivers, and coasts have declined
- Indian Peafowl continues to thrive
- Rainforest migratory shorebirds, and ducks have declined the most



The Asian Koel (top) shows a dramatic increase since 2000. Photo by Abhishek Das  
Western Ghats endemic birds like the White-bellied Blue Flycatcher (above) are most severely impacted. Photo by Albin Jacob

## THE MAJOR THREATS FACING INDIAN BIRDS

### CLIMATE CRISIS

Timings of annual events (e.g. migration, nesting, insect emergence) become asynchronous.

For sedentary birds, dealing with climate change will require rapid adaptive changes.

Bird species are shifting their ranges to higher latitudes (i.e. away from the tropics and towards the poles) and in mountains, to higher elevations.

### DISEASE

Nearly 7% of globally threatened bird species have declined due to avian malaria.

Avian influenza outbreaks in 2020-2021 across India, caused mass mortality of wild birds.

### ENERGY INFRA

Collision of birds with rotating wind turbine blades; Displacement of birds from the turbine area due to disturbance

### URBANISATION

Urban habitats tend to be unsuitable for rare and specialist species, while promoting common species.

In central Delhi, fruiting trees offer resources for some non-native birds such as Brown-headed Barbet and Yellow-footed Green Pigeon. But urbanisation leads to a homogenisation of bird communities due to the increased abundance of birds adept at exploiting ecological niches.

## पारस्थितिकी तंत्र में पक्षयों की व्यवहार्य आबादी सुनिश्चिति करने के लिये संभावति कदम:

### ■ प्रयावास संरक्षण और पुनरुद्धारः

- जंगलों, आरदरभूमियों, घास के मैदानों और तटीय क्षेत्रों जैसे प्राकृतिक आवासों की रक्षा तथा संरक्षण करना, जो पक्षयों के घोंसले, भोजन एवं प्रजनन के लिये आवश्यक हैं।
- देशी वनस्पतिलिंगाकर और पक्षयों की आबादी के लिये खतरा पैदा करने वाली आक्रामक प्रजातियों को हटाकर नष्ट हुए आवासों को पुनरस्थापित करना।

### ■ संरक्षण क्षेत्र और रजिस्ट्रेशन:

- संरक्षण क्षेत्रों और वन्यजीव अभ्यारण्यों की स्थापना व प्रबंधन करना जहाँ पक्षी मानवीय हस्तक्षेप के बना रह सकें।
- इन क्षेत्रों में आवास वनिश और गड़बड़ी को रोकने के लिये नियम और दशा-नियम लागू करना।

### ■ प्रदूषण कम करना:

- वायु और जल प्रदूषण सहति प्रदूषण स्रोतों को नियन्त्रित करना, जो पक्षयों की आबादी को सीधे या उनके खाद्य स्रोतों के संदूषण के माध्यम से नुकसान पहुँचा सकते हैं।
- शहरी और औद्योगिक क्षेत्रों में प्रदूषण को कम करने के लिये स्थायी प्रथाओं को बढ़ावा देना।

### ■ जलवायु परविरतन को कम करना:

- ग्रीनहाउस गैस उत्तराधिकार को कम करके और टकिाऊ ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा देकर जलवायु परविरतन का समाधान करना।
- आवास गलियारों का समर्थन करना जो पक्षयों को स्थानांतरित करने और बदलती जलवायु परस्थितियों के अनुकूल होने की अनुमति देते हैं।

### ■ मानवीय हस्तक्षेप को सीमिति करना:

- घोंसले बनाने और भोजन प्रदान करने वाली जगहों पर विशेष रूप से प्रजनन के मौसम के दौरान गड़बड़ी को कम करने के महत्व के बारे में जनता को शक्तिपूर्वक करना।
- मानवीय हस्तक्षेप को कम करने के लिये संवेदनशील पक्षी आवासों के आसपास बफर ज़ोन स्थापित करना।

## वभिन्न पक्षी प्रजातियों की सुरक्षा के लिये किये गए उपायः

### ■ प्रवासी पक्षयों के संरक्षण के लिये राष्ट्रीय कार्य योजना (2018-2023)।

- बाघ, एशियाई हाथी, हमि तेंदुआ, एशियाई शेर, एक सींग वाला गैंडा और ग्रेट इंडियन बस्टर्ड जैसी प्रजातियों के संरक्षण के लिये सीमा पार संरक्षण क्षेत्र।

### ■ वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972

- भारत ने गदिधों के संरक्षण के लिये कई आवश्यक कदम उठाए हैं जैसे-डाइक्लोफेनाक का पशु चकितिसा में उपयोग पर प्रतिबंध, गदिध प्रजनन केंद्रों की स्थापना आदि।